श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति
राजस्थान का उद्‌बोधन

मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर का इण्डिया इन्टरनेशल कॉन्फ्रेन्स (वर्चुयल), 2020 कार्यक्रम

दिनांक 18 दिसम्बर, 2020 **समय प्रातः : 11.30 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

आज के इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे उपस्थित देश–विदेश के भुगोलविदों और अन्य विद्वतजनों का मैं अभिनंदन और स्वागत करता हूं। यह सुखद है कि मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय, गैर–सरकारी, विशेषज्ञों के संगठन अंतर्राष्ट्रीय भौगोलिक संघ (आईजीय) द्वारा महत्वपूर्ण विषय 'ग्लोबल टू लोकल सस्टेनिबिलिटी' पर यह सम्मेलन आयोजित किया गया है।

'वैश्वीकरण से स्थानीय स्थिरता और भविष्य की पृथ्वी' बेहद महत्वपूर्ण विषय है। इस विषय पर सभी स्तरों पर चिंतन आज के संदर्भों में बेहद प्रासंगिक भी है। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि यह समय कोविड–19 महामारी का है। पूरा विश्व आज इस महामारी से आक्रान्त है। इस दौर से यह सीख भी पूरे विश्व ने ली होगी कि वैश्वीकरण में विकास जितना जरूरी है उतनी ही जरूरत स्थानीय स्तर पर स्थिरता के साथ प्राकृतिक संतुलन और मानव सुरक्षा को बनाये रखने की भी है।

कोविड–19 महामारी ने दुनिया भर को यह संदेश दिया है कि एक सूक्ष्म सा वायरस भी हमारे पूरे जीवन को अस्त–व्यस्त कर सकता है। दुनियाभर के देशों को इस वायरस के कारण आम जीवन पर सख्त प्रतिबंध लगाने के लिए मजबूर होना पड़ा है। इन प्रतिबंधों से सामाजिक जीवन और औद्योगिक गतिविधियाँ बड़े पैमाने पर दुनिया भर में लगभग थमी–थमी सी रही हैं।

इस पूरे परिप्रेक्ष्य में इस बात पर गहराई से विचार करने की भी जरूरत है कि हमने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तथा नवीनतम वैज्ञानिक विकास की ऊंचाईयां तो छू ली है परन्तु उसके विपरीत प्रभावों से होने वाले मानवीय नुकसान के बारे में अभी भी बहुत से स्तरों पर अनजान हैं।

मैं यह मानता हूं कि 'सतत विकास' सभी देशों के लिए जरूरी है परन्तु इस बात पर भी लगातार चिन्तन जरूरी है कि यह विकास किस कीमत पर हमें मिल रहा है? ऐसा विकास कभी भी स्थायी नहीं हो सकता जिससे पर्यावरण को हानि पहुंचे। ऐसा विकास हमारी प्राथमिकता भी नहीं होना चाहिए जिससे धरती हरी भरी

नहीं रहे। ऐसे विकास का लक्ष्य लाभकारी नहीं हो सकता जिससे मानव जीवन पर खतरा मंडराए।

मूल बात यह है कि हम सतत् विकास की ऐसी सोच पर कार्य करें जिससे वैश्वीकरण से स्थानीय विकास को बल मिले। हमारी पृथ्वी पर विकास हो परन्तु उसमें सभी के कल्याण को स्थायित्व देने हेतु अनवरत रूप से कार्य हो।

पूरा विश्व मिलकर इस सबंध में अपेक्षित बदलाव ला सकता हैं। जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में भारत ने नियम–आधारित, न्यायसंगत और बहुपक्षीय सहयोग देकर महत्वपूर्ण हिस्सेदारी निभाई है और अभी भी निभा रहा है। हमारा देश दुनिया के बड़े जैव–विविध देशों में से एक है। देश के वनाच्छादित क्षेत्र में भी पिछले कुछ समय के दौरान निरन्तर वृद्धि हुई है। परन्तु इस सबके साथ इस बात को भी ध्यान में रखा जाना जरूरी है कि हमारा देश सबसे घनी आबादी के देशों में से एक है। चीन के बाद इसकी दूसरी सबसे बड़ी आबादी भी है। जनसंख्या के मौजूदा रुझान जारी रहने पर एक दशक से भी कम समय में हम आबादी में चीन से भी आगे निकल जाएंगे। इस बात को भी ध्यान रखने की

जरूरत है कि दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद, भारत में अंतरराष्ट्रीय गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की सबसे बड़ी संख्या भी है। आकार और तेजी से विकास के कारण, 'स्थिरता' और सतत विकास आज भी यहाँ सबसे बड़ी चुनौती है। इसी के लिए हम सभी को मिलकर कार्य करने की जरूरत है।

यह बात सही है कि वैश्वीकरण समय की जरूरत है। इससे विचारों, प्रौद्योगिकियों, कौशल, वस्तुओं एवं सेवाओं का विश्व स्तर पर आदान–प्रदान होता है परन्तु मुझे यह भी लगता है कि इसमें कईं बार समर्थ अधिक समर्थ और कमजोर और अधिक कमजोर होता चला जाता है। चीन ने वैश्वीकरण का जितना फायदा उठाया है, उतना और किसी देश ने नहीं उठाया।

इसलिए इस बात को भी समझने की जरूरत है कि वैश्वीकरण का फायदा तभी मिल सकता है जब हमारे पास उपलब्ध संसाधनों के समुचित प्रबंधन के साथ उससे जुड़ी जोखिमों के उचित प्रबंधन पर भी ध्यान दिया जाए।

वैश्वीकरण का अर्थ है विश्व का एकीकरण। पिछले कुछ समय के दौरान यह शब्द बहुत तेजी से प्रचलित हुआ है परन्तु भारतीय संस्कृति तो आरम्भ से ही वैश्विकरण की सोच से जुड़ी रही है। हमारे यहां 'वसुधैव कुटुम्बकम' की जो अवधारणा है उसका अर्थ ही पूरे विश्व को एक परिवार मानकर चलना रहा है।

मोटे तौर पर स्थानीय के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया को वैश्वीकरण कहा जाता है। इस प्रक्रिया में राष्ट्रों का आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर एक तरह से संयोजन होता है। यह माना जा सकता है कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में एकीकरण वैश्वीकरण है। पर भारतीय सोच के अनुसार 'वसुधैव कुटुम्बकम' को यदि वैश्वीकरण मानें तो इसमें केवल भौतिक प्रगति और विकास ही महत्वपूर्ण नहीं होगा बल्कि मानव कल्याण भी सर्वोपरी होगा। विकास से जीवन की समृद्धि होना एक बात है परन्तु उतना ही महत्वपूर्ण यह भी है कि जो विकास हो रहा है, उससे जीवन सुखी और अंदर से संपन्न भी हो।

वैश्वीकरण और पूरे विश्व को एक समझकर कार्य करना–इन दोनों को मैं अलग–अलग मानता हूं। व्यक्तिगत मेरी यह मान्यता है कि इस समय का वैश्वीकरण तेजी से घटित होने वाली विश्व के एकीकरण की यांत्रिक प्रक्रिया है जबकि पूरी पृथ्वी को परिवार मानते हुए सोचकर सभी के हित के लिए कार्य करना भारतीय संस्कृति की सोच का हमारा अपना 'वैश्वीकरण' है।

तकनीक ने देशों की दूरियों को कम कर दिया है और आर्थिक एकीकरण की राह को भी आसान किया है, इसे ही वैश्वीकरण कहा जा रहा है परन्तु विचार करें कि इससे भौतिक रूप में तो लाभ हुआ है परन्तु मानसिक रूप में हमें हमारी विरासत, संस्कृति ओर अपनापे से दूर होते चले जाने की पीड़ा भी दी है। मैं तो बल्कि यह भी मानता हूं कि इस समय का जो वैश्वीकरण है वह जबरदस्ती से देशों के परस्पर निकट आने की लादी गयी घनिष्ठता है। और जो संबंध बलात् लादे जाएं, उनसे पारस्परिक मतभेद और गहरे होते हैं। ऐसे देश जो समर्थ हैं, जिनके पास अधिक क्षमताएं हैं वे हमें इस वैश्वीकरण में निराश कर रहे हैं। अपने स्वार्थ के लिए, प्रभुत्व के लिए वैश्वीकरण के बहाने ऐसे समर्थ

देश दूसरों के लिए निरन्तर नुकसानदायी बन रहे हैं। इसलिए इस बात से भी सावधान रहने की जरूरत है कि वैश्वीकरण के बहाने कोई राष्ट्र हमारी अस्मिता, हमारी मानव सम्पदा का नुकसान न करें। वैश्वीकरण से स्थानीय स्थिरता और भविष्य के विकास के लिए यह बहुत जरूरी है।

वैश्वीकरण से स्थानीय स्थिरता की बात तब तक बेमानी है जब तक शांति, सुरक्षा ओर सद्भावना के लिए विश्व स्तर पर कार्य नहीं होगा। यह बात सही है, मनुष्य ने अन्य जीव जंतुओं से आरम्भ से ही निरन्तर विकास किया है। विज्ञान और तकनीक ने मनुष्य के भौतिक संसाधनों में उत्तरोत्तर वृद्धि की है परन्तु इस विकास से मनुष्य के सुख में अधिक वृद्धि नहीं हुई है। मशीनों से मनुष्य जीवन सुविधाभोगी और बेहतर हुआ है परन्तु असमानताएं भी बढ़ी है। गरीबी, भूखमरी, बेकारी, अशिक्षा अभी भी बड़े स्तर पर कायम है।

इसका अर्थ स्पष्ट है कि विकास का लाभ समान रूप से लोगों को नहीं मिला है। मैं समझता हूं, वैश्वीकरण से स्थानीयता के स्थायी विकास के लिए कार्य करना अधिक जरूरी है। स्थानीय संस्कृति के

संरक्षण के साथ मानव और प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग और उसके लिए प्रकृति के संतुलन को साधते हुए कार्य किया जाता है तो ऐसा कार्य स्थायी और सतत विकास का बड़ा आधार बनेगा। इसी पर आप सभी शिक्षाविद्ों को चिंतन करने की आवश्यकता है कि कैसे वैश्वीकरण हमारी स्थानीय संस्कृति के संरक्षण के साथ मानव कल्याण की सोच के साथ सतत विकास में उपयोगी हो।

इस सम्मेलन के अंतर्गत वैश्वीकरण से स्थानीय सतत विकास के अंतर्गत सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं का संतुलित समन्वय करते हुए कार्य किए जाने की भविष्य की योजनाओं पर भी मंथन किए जाने का मैं आप सभी से आह्वान करता हूं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले कुछ वर्षों के दौरान देश में अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के लिए जो कार्य किए गए है, उनको आगे बढ़ाने में शिक्षण संस्थाओं की भी मैं महत्वपूर्ण भूमिका मानता हूं। शिक्षण संस्थाएं विकास के लक्ष्यों के साथ ऐसी योजनाओं और कार्यों के शोध अनुसंधान को बढ़ावा दें जिससे मानवीय जीवन ओर बेहतर हो सके। नई शिक्षा

नीति में कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। जरूरत इस बात की भी है कि शिक्षण संस्थाएं कौशल विकास के साथ नवाचार अपनाते हुए शोध एवं अनुसंधान की ऐसी दृष्टि पर कार्य करे जिससे स्थायी मानवीय विकास को गति मिल सके।

मेरा यह भी मानना है कि टिकाऊ विकास के लिए केवल आर्थिक विकास वृद्धि पर ही अधिक ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत नहीं है बल्कि समानता के साथ इस तरह के कार्यों पर अथिक ध्यान दिया जाए जिनसे देश में शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ सभी की बेहतरी हो सके। पर्यावरण संरक्षण पर भी ध्यान देना जरूरी है। वही विकास स्थायी रह सकता है जिससे मानवीय जीवन पर किसी तरह की आंच नहीं आए।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा चुनी हुई एक हजार विश्वविद्यलयों की की NIRF रैंकिंग लिस्ट में अग्रणी स्थान पर है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा राज्य परियोजना निदेशालय रूसा के अंतर्गत 2020–21 में इसे राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के तहत 50 करोड़ रूपये की

स्वीकृति मिली है। उद्यमिता, नवाचार एवं करियर दृष्टि से विश्वविद्यालय में कौशल आधारित सर्टिफिकेट, डिप्लोमा कोर्स एवं प्रशिक्षण कार्यशालाएं प्रारंभ करने की पहल की गयी है। यह भी सुखद है कि शहरी विद्यार्थियों के साथ–साथ दक्षिण राजस्थान के ग्रामीण व् आदिवासी इलाकों के विद्यार्थियों को भी प्रशिक्षित करने की योजना पर आप कार्य कर रहे हैं।

मुझे यह बताया गया है कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने विषय विशेषज्ञ द्वारा स्क्रीनिंग के बाद विश्वविद्यालय द्वारा अनुसन्धान एवं नवाचार परियोजना के अंतर्गत भेजे हए 72 में से 56 प्रोजेक्ट्स को मंजूरी दे दी है। इनके अंतर्गत दक्षिण राजस्थान की सामाजिक, पर्यावरण एवं अकादमिक मुद्दों से जुडे विषयों पर आप काम करने जा रहे हैं। मैं समझता हूं, क्षमता निर्माण एवं आजीविका सुरक्षा, महिलाओं के कानूनी अधिकार, आदिवासी लोकगीत एवं साहित्य, स्मार्ट गांव की पहल, सड़क दुर्घटनाओं के लिए प्रेडिक्शन मॉडल, चुनावी सूचना प्रणाली, सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, जनसंचार का सामाजिक– आर्थिक विकास में योगदान, भूजल की गुणवत्ता का आकलन, पारंपरिक औषधीय पौधों का उपयोग, इ– लर्निंग आदि की परियोजनाओं

पर विश्वविद्यालय जो कार्य करेगा, उसके दूरगामी परिणाम राजस्थान के दीर्घकालीन विकास के रूप में सामने आएंगे। विश्वविद्यालय ने रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों की जो शुरूआत की है, उसका प्रस्तुतिकरण मैंने देखा है–मैं तहेदिल से इन प्रयासों की सराहना करता हूं। दूसरे शिक्षण संस्थानों को भी चाहिए कि वे इस विश्वविद्यलालय से प्रेरणा लेकर उद्यमिता और दक्षता विकास के लिए निरन्तर कार्य करे।

कौशल विकास आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षण संस्थाओं, उद्योगों और सरकारी क्षेत्र में निरन्तर कार्य करने की जरूरत है।

यह समय ऐसा है जब चीजें तेजी से बदल रही है। कोरोना महामारी ने पूरे विश्व को हिलाकर रख दिया है। ऐसे में विश्व के सभी देशों को चाहिए कि वे धरती और उस पर रहने वाले लोगों के संरक्षण को ध्यान में रखते हुए कार्य करें। ऐसा आर्थिक विकास अधिक प्रभावी या कारगर नहीं हो सकता जिसका मूल्य मानव हानि के रूप में सामने आए। इसलिए जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और इससे मानव जीवन पर बढ़ते

खतरों को ध्यान में रखकर टिकाऊ विकास के लिए कार्य करने की सभी स्तरों पर जरूरत मैं महसूस करता हूं। इसी से आपके सम्मेलन के उद्देश्य की भी सही मायने में पूर्ति की जा सकती है।

मैं उम्मीद करता हूँ कि आप भूगोलविदों, शिक्षाविद्ों के विमर्श से निकले नीतिगत सुझाव न केवल भारत देश अपितु दक्षिण एशिया और शेष दुनिया के सतत विकास और वैश्विक स्थिरता हेतु अनुकरणीय साबित होंगे।

आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर अपनी बात रखने के लिए मुझे आमंत्रित किया, इसके लिए बहुत बहुत आभार।

धन्यवाद। जय हिन्द!